द्विदलीय व्यवस्था

राजनीतिक दल किसी भी लोकतांत्रिक शासन के प्राण होते हैं। फाइनर एवं लास्की जैसे विद्वानों ने राजनीतिक दलों को शासन के पीछे की शक्ति तथा भावावेश जनित क्रान्ति पर अंकुश लगाने वाला बताया। ड्यूभर्जर, मैकाइवर आदि विद्वानों ने इसके लक्षणों पर प्रकाश डाला। भारतीय विद्वान जे. सी. जौहरी एवं अन्य पाश्चात्य विद्वानों ने विभिन्न राजनीतिक व्यवस्थाओं के दलों की प्रकृति का अध्ययन किया तथा पाया कि विश्व में तीन प्रकार की दलीय व्यवस्थाएँ होती है – एक दलीय व्यवस्था, द्विदलीय व्यवस्था तथा बहुदलीय व्यवस्था। यहां हम द्विदलीय व्यवस्था की चर्चा करेंगे।

जिन देशों में केवल दो ही दल प्रभावी होते हैं तथा बारी बारी से सत्ता में काबिज होते हैं उन्हें हम द्विदलीय व्यवस्था कहते हैं। ऐसी राजनीतिक व्यवस्थाओं ज्वलंत उदाहरण ब्रिटेन और अमेरिका हैं। इन दोनों व्यवस्थाओं में प्रारंभ से ही दो ही दल प्रभावी रहे हैं। काल के अन्तराल पर दल तो बदलते हैं परन्तु उनमें दो ही दल परस्पर स्पर्द्धा में रहते हैं तथा सत्ता एवं विपक्ष में बारी बारी से आते रहते हैं। ब्रिटेन में 1688 से दलों का प्रादुर्भाव हुआ तो अमेरिका में 1779 से। प्रारंभ में जो दल थे बाद में वो विलीन हो गये और नये दल उदित हुए। हम ब्रिटेन एवं अमेरिकी द्विदलीय व्यवस्थाओं में दलो के इतिहास, उनका प्रभाव, उनका संगठन एवं नीतियों या विचारधारा के संदर्भ में तुलनात्मक विवेचन करेंगे।

ब्रिटेन एवं अमेरिकी द्विदलीय व्यवस्था का इतिहास

ब्रिटेन – इतिहास पर दृष्टि डालें तो वास्तव में ब्रिटेन में दलों का उदय 1688 की क्रान्ति के बाद हुआ जिनका नाम व्हिग पार्टी तथा टॉरी पाटी है जो क्रमशः उदारवादी एवं रूढ़िवादी पार्टियां थी। यही दलीय व्यवस्था ब्रिटेन में 150 सालों तक चली। 1832 में सुधार अधिनियम पारित होने के पश्चात व्हिग पार्टी लिबरल या उदारवादी दल तथा टॉरी पार्टी रूढ़िवादी दल के रूप में उदित हुए। बीसवीं सदी के प्रथम दो दशकों में नई विचारधारा का विकास हुआ जिसमें मजदूर हितों की संरक्षा एक मुद्दा बन गया और 1900 में मजदूर प्रतिनिधित्व समिति बनी जिसने 1906 के चुनावों में अपना अस्तित्व बना लिया। यही संगठन मजदूर दल या लेबर पार्टी के रूप में विकसित हो गया। 1924 आते आते लेबर पार्टी सत्ता में आ गइ और उदार दल धीरे धीरे विलुप्त हो गया। इस प्रकार 1924 के बाद रूढ़िवादी दल एवं लेबर पार्टी ही प्रभाव में रहे।

अमेरिका – 1776 में फिलाडल्फिया सम्मेलन में ही राजनीतिक दल के बीज पड़ गये थे जब हेमिल्टन और जेफर्सन के नेतृत्व में दो गुट बन गये। हेमिल्टन ने मजबुत केन्द्र की तथा जैफर्सन राज्यों की अधिक स्वायतता की वकालत की तथा इन गुटों को फेडरलिस्ट तथा एण्टी फेडरलिस्ट बुलाया जाने लगा जो बाद में फेडरलिस्ट और डेमोक्रटिक रिपब्लिकन दल के रूप में प्रसिद्ध हुए। फेडरलिस्ट सत्ता मे आये परन्तु 1815 तक फेडरलिस्ट दल विलुप्त हो गया।

अब एक मात्र डेमोक्रटिक रिपब्लिकन में गुटबाजी हो गई और एक धड़े का नाम व्हिग पार्टी हो गया तथा दूसरे का रिपब्लिकन। 1856 आते आते व्हिग पार्टी का पतन हो गया। पुनः रिपब्लिकन पार्टी में फूट हो गई तथा केनद्रवादी विचारधारा वाला धड़ा रिपब्लिकन तथा राज्यों के स्वायतता का हिमायती धड़ा डेमोक्रैट दल के रूप में अस्तित्व में आ गये। बीसवीं सदी के आरम्भ तक एक दो छोटे दल अस्तित्व मे आये परन्तु वो विलुप्त हो गये। तबसे ये दानो दल बारी बारी से अपना प्रभाव बनाये रखने में कामयाब रहे।

ब्रिटेन एवं अमेरिका के दलों का संगठन

ब्रिटेन – के दोनो दलों में सांगठनिक अंतर स्पष्ट है। 1832 के सुधार अधिनियम के बाद रूढ़िवादी दल एक केन्द्रीकृत संगठन में विकसित हुआ और 1870 में केन्द्रीय कार्यालय का गठन किया गया जिसके निर्देश में राष्ट्रीय स्तर पर दलीय संगठन का सभापति, केन्द्रीय परिषद, 12 प्रान्तीय परिषदों तथा निर्वाचन क्षेत्र के स्तर पर परामशदात्री समिति तथा निर्वाचन क्षेत्र संघ का गठन किया गया। परन्तु उल्लेखनीय है कि सम्पूर्ण दल पर नियंत्रण तथा निदेश दल के केन्द्रीय नेता का होता है जो विभिन्न स्तर पर दलीय संगठनों के प्रधानो तथा चुनावी उम्मीदवारों का मनोनयन करता है। वही दल के वित्तीय नीतियों का निर्माण करता है। इस प्रकार इस दल में सत्ता केन्द्र में निहित होती है।

वहीं दूसरी ओर मजदूर दल का संगठन विकेन्द्रीकृत तथा लोकतांत्रिक तरीके से बनता है। 1918 में इस दल मे शामिल होने के लिए किसी संगठन की अनुसंशा की आवश्यकता थी परन्तु बाद में इस दल की सदस्यता सबके लिए खुला कर दिया गया। निर्वाचन क्षेत्र के स्तर पर दलीय संगठन हैं जिनके पदाधिकारियों का चुनाव होता है तथा केन्द्रीय सम्मेलन में उनका अनुमोदन होता है। इस प्रकार 600 ऐसे दलीय संगठन हैं तथा उनके सरपरस्ती के लिए 11 क्षेत्रीय समूह भी बनाये गये हैं। 1981 से मजदूर दल के संगठन का चुनाव अप्रत्यक्ष रूप से निर्वाचक मण्डल द्वारा किया जाने लगा। इस निर्वाचक मण्डल में संघीय मजदूर दल के 30 प्रतिशत, निर्वाचन क्षेत्रीय दल के 30 प्रतिशत तथा मजदूर संगठनों के 40 प्रतिशत प्रतिनिधि होते हैं। इनके अलावा भी कई दल हैं जिनका प्रभाव नगण्य है।

अमेरिका – अमेरिका के दोनो रिपब्लिकन तथा डेमोक्रेटिक दलों का संगठनात्मक रचना एक प्रकार की है। दोनों ही दलों का स्थायी संगठन है तथा वह पांच स्तरीय है –

मतदान जिला समितियां – सबसे निचले स्तर की इन समितियों को Precinct Committees भी कहा जाता है। जनसंख्या के आधार पर इन समितियों में 100 से 500 तक चुनाव अधिकारी होते हैं। अमेरिका में ऐसी सवा लाख समितियॉ हैं। इस समिति का कार्य मतदाताओं से सम्पर्क करना तथा उनकी समस्यओं का निवारण करना होता है।

नगर, कस्बा और ग्राम समितियॉ – सभी नगरों, कस्बों एवं ग्रामों के स्तर पर दलों की समितियां बनती हैं जो मतदान जिला समितियों का पर्यवेक्षण करती हैं तथा स्थानीय समस्याओं के हल में उनका मदद करती हैं।

काउन्टी समितियॉ – अमेरिका में लगभग 3000 काउन्टियॉ हैं। प्रत्येक काउन्टी में दलीय समितियों का गठन किया गया जाता है। ये ज्यादातर ग्रामीण क्षेत्रों में पाये जात हैं।

राज्य केन्द्रीय समिति – अमेरिका के 50 राज्यों में एक एक केन्द्रीय समितिय होती है जिसका काम राज्यभर में फैले दलीय समितियों का अनुश्रवण तथा निगरानी करती है। ये समितियां राज्य एवं संघ के स्तर पर विभिन्न पदो जैसे प्रतिनिधि सभा तथा सिनेट के पदें पर चुनाव संबंधी कार्यों का दायित्व होता है। इस समिति में कुछ सदस्य निर्वाचित होते हैं तथा कुछ मनोनित होते है। इसका प्रधान के रूप में एक योग्य व्यक्ति को चुना जाता है।

राष्ट्रीय समिति – दलों के शीर्ष पर राष्ट्रीय समिति होती है जिसमें प्रत्येक राज्य से दो प्रतिनिधि चुनकर भेजे जाते है जिसमें एक महिला और एक पुरूष होता है। इस समिति में दलों की सारी शक्तियां होती हैं। इसके अध्यक्ष का चुनाव नहीं होता अपितु मनोनयन होता है जिसे राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार द्वारा मनोनित किया जाता है। परन्तु राष्ट्रीय समिति से इसका अनुमोदन लेना होता है। यह राष्ट्रपति के पद के चुनाव से संबंधित सभी निर्णय लेती है। उपरोक्त सभी स्तरों पर पदाधिकारियों का चुनाव होता है परन्तु राज्य केन्दीय समिति के कुछ सदस्य तथा राष्ट्रीय समिति के अध्यक्ष मनोनित किये जाते हैं।

ब्रिटेन एवं अमेरिकी दलों की विचारधारा

ब्रिटेन के दानों प्रमुख – रूढ़िवादी दल एवं श्रमिक दल – दलों में वैचारिक अंतर स्पष्ट दिखता है। जर्हा रूढ़िवादी दल पूंजीवादी अर्थव्यवस्था और विद्यमान स्थिति को कम से कम परिवर्तनो के साथ बनाये रखने के पक्ष में होते हैं वहीं श्रमिक दल का उददे्श्य शान्तिपूर्ण और संवैधानिक पद्धति से प्रजातांत्रिक समाजवाद की स्थापना रहा है।

अमेरिकी राजनीतिक दलों – रिपब्लिकन एवं डेमोक्रेटिक – में विचारधारा संबंधी काई अन्तर नहीं है। विदेशनीति हो या राजनीतिक आर्थिक जीवन के आदर्शों के सम्बन्ध में दोनों ही राजनीतिक दलों का दृष्टिकोण एक समान है।

तुलनात्मक समीक्षा

फाइनर ने इनकी तुलना करते हुए लिखा है कि ''ब्रिटेन के रूढ़िवादी तथा श्रमिक दलों की स्पष्ट भिन्नता के समान विभिन्न आदर्शों की साधना के आधार पर रिपब्लिकन एवं डेमोक्रटिक दलों की बीच की अंतर की कोई रेखा नहीं खींची जा सकती। वास्तव में इन्हें एक ही दल के दो अंग कहना अधिक उचित होगा जिनको रिपब्लिकन और डेमोक्रेटिक दो विभिन्न नामों से पुकारा जाता है।'' लॉर्ड ब्राइस ने भी अमेरिकी राजनीतिक दलों की तुलना दे ऐसी खाली

बोतलों से की है जिनमें अलग अलग पेय के लेबल लगे हैं। वहीं एमरसन ने कहा कि साधारणतया अमेरिकी दल परिस्थितियों के दल हैं सिद्धान्तों के नहीं।

ब्रिटेन एवं अमेरिकी दलों के प्रभाव का आकलन

ब्रिटेन में दलीय व्यवस्था के प्रारंभ से 1830 से 1874 तक उदारवादी दल का एकक्षत्र प्रभाव रहा परन्तु उसके बाद कुछ अपवादों को छोड़ कर 1905 तक रूढ़िवादी दल के हाथ में सत्ता रही। 1906 से 1915 मे उदार दल पुनः सत्ता में रही परन्तु इसी क्रम में श्रमिक दल का प्रादुर्भाव हुआ। प्रथम विश्वयुद्ध के उथल पुथल के बाद श्रमिक दल का प्रभाव बढ़ने लगा और 1924 में यह पहली बार सत्ता मे आई। पुनः यह 1945–1949 और 1964–1969 सत्ता मे रही। 1979 के बाद 1997 तक रूढ़िवादी दल सत्ता मे रही परन्तु 1997 के चुनावों के बाद श्रमिक दल टॉनी ब्लेयर के नेतृत्व में सत्ता में आइ उसके बाद दो चुनावों में श्रमिक दल का शासन रहा। बाद में रूढ़िवादी दल पुनः सत्ता में आ गई। वर्तमान समय में रूढ़िवादी दल ही सत्ता में है।

अमेरिकी दलों के प्रभाव का आकलन 1950 के बाद किया जा सकता है। 1952 से 1992 के बीच तीन बार डेमोक्रटिक पार्टी का राष्ट्रपति बना शेष में रिपब्लिकन पार्टी का। उसके बाद 1992 से 2000 तक डेमोक्रटिक पार्टी के पाले में यह पद था। सन् 2000 से 2008 तक रिपब्लिकन पार्टी के बिल क्लिंटन इस पद पर काबिज रहे। पुनः 2009 से 2017 तक डेमोक्रेटिक पार्टी के ओबामा तथा 2017 से अब तक रिपब्लिकन पार्टी के ट्रम्प इस पद पर बने हैं। अमेरिकी कॉग्रेस में इन दो दलों की स्थिति 1984 से आकलन निम्न सारिणी से की जा सकती हैः–

दल	1984		1988		1992		1996	
	प्र. सभा	सीनेट	प्र. सभा	सीनेट	प्र. सभा	सीनेट	प्र. सभा	सीनेट
रिपब्लिकन	192	53	177	44	166	41	229	51
डेमोक्रेटिक	243	47	255	56	268	59	206	49

प्र. सभा – प्रतिनिधि सभा

निष्कर्ष

इस प्रकार देखा जाय तो ब्रिटेन और अमेरिका दोनो ही राजनीतिक व्यवस्थाओं में दो दल हीं प्रभावी रहे हैं तथा बारी बारी से सत्ता पर काबिज भी होते रहे हैं। यह बात अलग है कि ब्रिटेन में दलों के सत्ता में आने की प्रकृति अमेरिका से भिन्न रही है। अर्थात् ब्रिटेन में लम्बे समय तक एक दल का प्रभाव रहा परन्तु अमेरिका में ऐसी बात नहीं है।